बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, पटना

खुरपका – मुंहपका रोग से बचाव हेतु सलाह

परिचय खुरहा मुँहपका एक विषाणुजनित संक्रामक रोग है जो खुर वाले पशु जैसे – गाय, भैंस, भेड़- बकरी आदि को तेजी से संक्रमित करता है। इसको खुरहा, आभा, चपका, अबहा, भजहा आदि नामों से भी जाना जाता है।

लक्षण

* रोगी पशु को उच्च बुखार (105^0 F तक)आना
* मुँह एवं खुरों में घाव एवं लंगड़ापन
* मुँह से चाशनी जैसा लार / पानी निकलना
* जीभ एवं मुँह में छाले / फफोले पड़ जाना
* दर्द एवं कमजोरी से खाना छोड़ देना
* पशुओं के उत्पादकता में कमी होना।

रोकथाम और नियंत्रण

- चार माह से उपर के पशुओं को समय पर टीकाकरण अवश्य करायें एवं हर छह माह के अंतराल पर दोबारा टीका लगवायें।
- इलाके में संक्रमण होने पर पशुओं को एक स्थान से दुसरे स्थान पर न ले जाए।
- रोगी पशु को स्वस्थ पशुओं से सर्वथा अलग रखें एवं उनका प्रबन्धन एवं चिकित्सा अलग से करें।
- प्रभावित पशु के माध्यम से चलने वाले वाहनों सहित प्रभावित कर्मियों, परिसरों और दूषित वातावरण की पूरी तरह से सफाई और कीटाणुशोधन 2 प्रतिशत लाल पोटाश के घोल अथवा ब्लीचींग पावडर तथा चूना के छिड़काव से करना चाहिए।
- रोगी पशु के थुथना, मुँह, जीभ एवं पैरों को 1 प्रतिशत लाल पोटाश अथवा 2 प्रतिशत बेकिगं सोडा (मीठा सोडा) के घोल से प्रतिदिन 2 से 3 बार धोना चाहिए।
- दर्दनिवारक एवं बुखार निवारक दवा पशुचिकित्सक के सलाह पर तुरंत शुरू करना चाहिए।

खुरपका – मुँहपका बीमारी के लक्षण दिखाई देने पर शीघ्र इसकी सुचना स्थानीय पशुचिकित्सालय को दें। रोग बचाव हेतु विश्वविद्यालय के पटना स्थित पशुचिकित्सालय में भी संपर्क किया जा सकता है।

बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय,पटना द्वारा जनहित में जारी